Tarun Jhankar

Dec - 2021

MODERN CHILD PUBLIC SCHOOL

Nangloi, Delhi-110041

स्वरचित कविता

मुश्किल बड़ा समय हैं
संयम बनाये रखना
एक फासला बनाकर
खुद को बचाये रखना।

न धर से बाहर हैं निकलना
न किसी से मिलना
मुहँ मे मास्क लगाकर
खुद को बचाये रखना।

विहान सिहँ
तीसरी "ब"

स्वरचित कविता

कोरोना तू कहाँ से आया

"ओ कोरोना तू कहाँ से आया।
सब कुछ हो गया पराया पराया।
तेरा आना किसी को ना भाया,
मम्मी बोले हाथ धोये घर से बहार कहीं ना जाये।
स्कूल की टीचर की याद सताए,
नानी का घर हमें बुलाए,
शॉपिंग के लिए भी मन ललचाए।
बर्थडे फीका फीका पड़ जाए।
ओ कोरोना तू बता हम छोटे -छोटे,

बच्चे कैसे अपना दिल बहलाए।
तेरा भय इतना सताए।
कोरोना तुझसे नहीं डरते हम,
तुझसे लड़ने का रखते है हम दम,
सोशल डिस्टेंसिंग निभाएंगे।
गुड़ सिटिजन बनकर दिखाएंगे।
घर में बैठकर तुझे हराएंगे।
अपना जीवन खुशहाल बनाएंगे|

दक्ष राठौर
चौथी "ब"

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
मात-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्त्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
बह मेरा पथ्दर्शक है जो ।
मेरे मन को भाता,
बह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

~~विश्वजीत
IV A
अनुक्रमांक: 29

कोरोना

सब कुछ हो गया पराया पराया।
तेरा आना किसी को ना भाया।
मम्मी बोले हाथ धोए।
घर से बाहर कहीं ना जाए।
सखा सहेली सब भूल जाए।
स्कूल की टीचर की याद सताए।
नानी का घर हमें बुलाए।
शोपिंग के लिए मन ललचाए।
बर्थडे फीका फीका पड़ जाए।
ओ कोरोना तू बता हम छोटे छोटे बच्चे कैसे अपना दिल बहलाए।
तेरा भय इतना सताए।
कोरोना तुझसे नहीं डरते हम।
हममें है तुझसे लड़ने का दम।
सोशल डिसटेंसिंग निभाएंगे।
गुड सिटिज़न बनकर दिखाएंगे।
सरकार के रूल्स अपनाएंगे।
घर मे बैठकर तुझे हराएंगे
और फिर अपना जीवन खुशहाल बनाएंगे ।

अंश सहरावत
रोल न:14
IV-A

कविता - प्लास्टिक हटाओ , जीवन बचाओ

प्लास्टिक को दूर हटाओ ,
कागज- कपड़ा- जूट अपनाओ ,
जहरीला है इसका रंग ,
धरती को कर दे बेरंग ।

डॉक्टर बार-बार हमें यह बताए ,
प्लास्टिक से कैंसर हो जाए ,
जले तो धुआं फैलाए ,
वातावरण दूषित हो जाए ,
इससे दम भी घुट जाए ।

कभी ना करो इसका उपयोग ,
पनपे इससे अनेकों रोग ,
जब भी आप बाजार जाएं ,
थैला कपड़े का ही अपनाएं ।

करो साकार सपना मोदी जी का जो था अधूरा ,
बनाकर स्वच्छ और स्वस्थ भारत को पूरा ।

नाम - खुशी
कक्षा - पांचवीं ब

उफ, यह कोरोना काल?

कब खत्म होगा यह कोरोना काल?

मानवता का कर दिया है बुरा हाल,

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

पूरी तरह भरे पड़े है हस्पताल,

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

जीवन, मृत्यु नहीं रहा कुछ,

मात्र आंकड़ों का बनकर रह गया है सवाल।

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

कहा गया था कि गर्मियों में खत्म हो जाएगा यह काल,

परंतु दो गर्मियों से यह मचा रहा है भौंकाल,

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

सरकार के बस में नहीं रहा अब,

कभी ओमीक्रॉन तो कभी कोरोना काल।

बन गया है यह एक अनसुलझा सवाल,

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

पेड़ों का आ रहा अब महत्व समझ,

क्योंकि ऑक्सीजन ही बन गई है जी का जंजाल।

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

अध्यापकों ने भी खूब सिखाया,

हम विद्यार्थियों को कोरोना से बचाकर पढ़ाया।

वैक्सीन आई तो आया सब्र,

उम्मीद दिखी कि अब कुतरा जाएगा कोरोना नाम का यह जाल।

परंतु ओमीक्रॉन ने आकर कर दिया है वापिस सब बेहाल,

न जाने कब खत्म होगा यह कोरोना काल!

अब एक होकर कुतरना पड़ेगा यह जाल,

सब दूर रहकर, एक साथ हो के करेंगे खत्म यह कोरोना काल।

नाम- वर्षा, कक्षा- दसवीं- ब

नया साल

आया है नया साल,लेकर खुशियों की बहार
नई रोशनी नई मुस्कान,नया सा होगा सारा संसार।

इस साल आई महामारी,भूकंप भी आए
संग अपने बेरोजगारी और तबाही लाए।

कितनो की हुई मौत,कितने हुए लाचार,
कठिनाइयां आई संसार में,छूटा अपनो का साथ।

पर अब आया है नया साल ,लेकर खुशियों की बहार
भुलाकर सारे गम करों एक नई शुरुआत।

भूलों मत ,जाता है अंधेरा आती है रोशनी
ये समय भी बीत जायेगा,एक नया सवेरा जरूर आएगा।

मीनाक्षी
नवी ब